

पोवारी दिवस



पोवारी दिवस

आज चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा, गुढीपाडवा हिंदू नववर्ष की सुरुवात.पहाटंको पांढरो शुभ्र उजाडो मा दवबिंदूं ईननं मोत्तीसारखी चमक लेई सेन. थंडो वारा को झुरकी नं आंगणमा को तुरसीला धीरू लक च कवटारीस अना हवा माकी पवित्रता,सुगंध जितंऊतं महकन बसी. आजको दिवस काहीतरी अलग से.वु मंजे गुढीपाडवा,विक्रम सवंत दिन, पोवारी दिवस!

गत कई साल की परंपरा आजही वोतरोचच तेजलक उजळ रही से. हर डहल, घर को सामने सळा रांगोळी लक सजाई चौकट, दरवाजा पर आंबा-फुल को तोरण की सजावट अना हरदी-कुकु को रंग– येनं सबमा एक अद्‌भुत मांगल्य को गंध आय रही से . आई-माई भी आपलो पारंपरिक वेशभूषा मा, कपार पर कुंकु को लाल टिरा लगायकर सजी सेती.उनको संग पुरुष वर्ग भी आपलो पारंपरिक वेशभूषा मा तयार होयकर घर को छत पर एक काठी ला लाल रंग को जरी को काठ को कोरो कपडा बांधकर वोला कडूलिंब की डार, माला गाठी, फुलंईंनकी की हार बांध रह्यासेत. वोकोपर पितर, तांबा को गडवा उबडो टाककर सनातनी हिंदू धर्म को प्रतीक- गुढी उभार रह्या सेती. अना आपलो पोवारी अस्तित्व अबाधित ठेवन को उद्देश लक माय गढकालिका देवी अना राजा विक्रमादित्य ला सुमर कर पोवारी दिवस मनाय रह्या सेत. येनं दिवस काहीतरी गोडधोड - बुड्ड्या,सुकुडा,भेली - रोटी, काही तरी मिठो पकवान की महक हर घरलक आय रही से.

पोवारी दिवस परंपरा संस्कृती को अभिमान
चलो साजरो करबं येव मंगल सोहळा महान

इतिहास को भान ठेयकर संस्कृती परंपरा जपकर, जात को नाव पर एक झंडा खाल्या आयकर आपलो अस्तित्व बचावन को ध्येयलक प्रेरित सब पोवार समाज पोवारी दिवस मनावन को तयारी मा लग्यासेत.

येव केवल एक दिवसच नोहोय, तं माती, परंपरा अना आपलो मुळ ईन को संग जोडने वालो एक सोहळा आय. येवं दिवस म्हणजे आपलो अस्मिता को सन्मान, आपलो संस्कृती को गंध, अना आपलो मुळ ईन संग आपलोला जोडणे वाली एक नाळ, धागा आय. आपलो पोवार समाज की ओळख देने वालो दिवस आय.

आज को दिवस संस्कृतीको सोनेरी पर्व आय.आज गुढीपाडवा अना विक्रम संवत दिवस आय. गुढीपाडवा म्हणजे हिंदू नववर्षको प्रारंभ, नवी उमेद अना नव संकल्पना की सुरुवात आय.. येनं दिवस गुढी उभारी जासे.ज्या विजय, समृद्धी अना संस्कृती, नवचैतन्य, नवसंकल्प को प्रतीक आय. येव दिवस केवल एक सण नोहोय तं भारतीय कालगणना मा को एक महत्त्व को टप्पा आय, जो विक्रमसंवत को सुरुवात संग जुडी से .

आपलो परमार,पोवार वंश का राजा विक्रमादित्य ईंननं इसवी सन पूर्व ५७ मा विदेशी आक्रमक शक ईनको पराभव करके विक्रम संवत की स्थापना करी होतीन. सम्राट विक्रमादित्य फक्त पराक्रमीच नव्हता, तं विद्वत्ता अना न्यायका प्रतीक भी होता. उज्जैन या उनकी राजधानी, जहा वय विद्वानईनको सन्मान करत होता.

तसोच माता गढकालिका – उज्जैन, धार की अधिष्ठात्री देवी आय.राजा विक्रमादित्य अना महाराजा भोज ईनको श्रद्धास्थान म्हणजे माता गढकालिका देवी. ज्या विद्या, शक्ती, कला की प्रतीक से.आज गुढीपाडवा को मुहूर्त पर चैत्रिय नवरात्र को प्रारंभ होसे.येनं दिवसच मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम अना महाराज युधिष्ठिर इनको राज्याभिषेक सोहळा भयेव होतो. स्कंद पुराण को अनुसार भगवान विष्णू नं येंनच दिवस मत्स्य अवतार धारण करीतीन.

आज को येव् शुभ मुहूर्त आपलोला, आपलो परंपरां, संस्कृती धरोहर की याद कर देसे.मुनच 36 कुल पोवार ईनको को अस्तित्व टिकावन सात दिनरात परिश्रम करने वाला आंमरो वरिष्ठ समाज कार्यकर्ता ईंनंन आजकों साडेतीन मुहूर्त मा को एक मुहूर्त- गुढीपाडवा, विक्रम सवंत दिन, चैत्र नवरात्र दिन, युधिष्ठिर व राजा राम राज्याभिषेक दिन, भगवान विष्णू को मत्स्य अवतार दिन असो षष्ठी संगमको दिंन पोवारी दिवस साजरो करन को निर्णय लेईन. सब पोवारी साहित्यिक येनं दिवस ला समाजवरी पोहोचावन सात साहित्यसृजन को कार्य मा जुट गया.अना मुनच आज विक्रम सवंत दिन म्हणजे पोवारी दिन, पोवार समाज को अस्तित्व को सन्मान दिन, आपलो पोवार समाज बडो स्वाभिमान लक मनाय रही से.

पोवारी दिवस - या ओळख आय एक जिवंत संस्कृती की, ज्या आवने वालो काल मा एक गौरवशाली संस्कृती म्हणून सिद्ध होये. तं चलो, आमी भी येनं संस्कृती,परंपरा का साक्षीदार बनबं.अना येव आपलो सांस्कृतिक वारसा पुढं को पिढीवरी पोहोचावबं!

शारदा चौधरी
भंडारा

पोवारी दिवस

सत्य सनातन धर्म का उपासक क्षत्रीय पोवार आज को दिवस ला सृष्टि निर्माण दिवस मान: सेती। ब्रह्म पुराण को अनुसार, आज को दिन परम ब्रह्म न् साकार रूप धारण कर ब्रह्मा, विष्णु आना महेश को त्रिविध स्वरूप बनाईन ।ब्रह्मा जी न आगे चलकर सृष्टि को संचालन शुरू करीन्।

फागुन माह मा प्रकृति आना धरती को एक चक्र पूरो होय जासे। जनवरी मा प्रकृति को चक्र पूरो नहीं होय। धरती को आप्ली धूरी पर घुमनो आना धरती को सूरज को एक चक्कर लगावन् को बाद जब दूसरो चक्कर चालु होसे, असल मा उच् नववर्ष आय। नववर्ष मा नवों सिरा लक् प्रकृति मा जीवन की शुरुआत होसे। वसंत की बहार आव: से। चैत्र माह अंग्रेजी कैलेंडर को मार्च आना अप्रैल को बीच आव: से। 21 मार्च ला पृथ्वी सूर्य को एक चक्कर पूरा कर लेसे,तब: दिन आना रात बराबर होसेती। योच् दिन लक् धरती को प्राकृतिक नववर्ष प्रारंभ होसे।

सूर्योदय लक नववर्ष प्रारंभ होसे, रात्रि को अंधकार मा नववर्ष का स्वागत नहीं होय। नवो साल सूरज की पहली किरण को स्वागत करके मनायो जासे। अंग्रेजी कैलेंडर को अनुसार रात्रि 12 बजे लक् नववर्ष प्रारंभ मान लियो जासे,जो कि वैज्ञानिक न्हाय। दिन और रात ला मिलाकन एक दिवस पूर्ण होसे। दिवस को शुभारंभ सूर्योदय लक् होसे। आना अगलो सूर्योदय तक यो चलतो रव्ह से।

विक्रमादित्य संवत ला सनातन धर्म को नववर्ष कह्यो जासे, काहे कि यो प्राचीन हिन्दू पंचांग आना तिथि पर आधारित से। 58 ईसा पूर्व राजा विक्रमादित्य न् खगोलविदन् की मदद लक् काल गणना व्यवस्थित करके प्रचलित करीन्। यो सनातन को नवसंवत्सर भी आय। बढ़ो सौभाग्य की बात या से कि हजारों हिन्दू जाति मा हमारा पुर्वज येन् शुभ काज का जनक बन्या।हाम्ही पोवार समाज का वंशज येन् सौभाग्य दिवस ला पोवारी संस्कृति को रक्षा, संवर्धन आना बढ़ावा लाय पोवारी दिवस को रूप मा मनाव: सेजन्।

हिन्दू नववर्ष घड़ी, तिथि आना प्रकृती को सौंदर्य को असो संजोग से कि दुनिया की हर वस्तु नवीं दिख:से।हाम्ही मुल रूप मा किसान आजन, आना किसान जवर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तक हर किसम की फसल घर:आय जासे।

नव संवत्सर, पोवारी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं आना मंगलमयी बधाईयां



यशवन्त तेजलाल कटरे ✍

पोवारी दिवस

*****

सनातन को धरोवरला,
वैभवशाली बनायेव जाये !
पोवारी दिन को उत्सवला,
सब घर मनायेव जाये !! ध्रु !!

सम्राट विक्रमा दित्यला,
मान कि से या श्रद्धांजली !
जनहित को चर्चा करनोमा,
इतिहास से गौरव शाली!
विक्रम सवंत को दिनला,
पोवारी दिवस कहेव जाये !! 1 !!

उद्देश पोवार महासंघ का ,
समय से पुरो करन को !
संस्कृती को टिकावनला,
समाजला से जागृत होन को !
नव जवान को पिढीला,
समज सबला देयेव जाये !! 1!!

विक्रम सवंत पासून से ,
सुरुवात हिंदी नव वर्ष की !
सन बीस पासून भयी से,
सुरुवात पोवारी दिन की !
जनमत को आधार परा ,
समाज शक्तीशाली बन जाये !! 2!!

हेमंत पी पटले
धामणगाव (आमगाव)
9272116501

पँवार दीस की खुशी

(पञ्चचामर छंद)
गणावली-जभान राजभा जभान राजभा जभान गा
मापनी- 12 12 12 12, 12 12 12 12

दयालु माय शारदा, सुबुद्धि भान देयदे |
मिटाव अंधकार ला, उजार ज्ञान देयदे ||
करो पँवार वंश ला, खुसाल हंसवाहिनी |
गुढ़ी सजायशान मी, करू वला सुवासिनी ||१||

गुढी पँवार वंश की, सजावु आज रंगमा |
पँवार दीस की खुसी, मनावु आज संगमा ||
उजार चैत पाडवा, उभी नवी गुढ़ी करो |
नवा बिचार संगमा, सुधारनी कड़ी धरो ||२||

मिलेव आज राम ला, किरीट राजपाट को |
खुसी मनावु यादमा, मनावु साल थाट को ||
सिहारपाठ जायके, करू दिदार राम को |
मिले कृपा सपा सरे, तनाव पूर्ण काम को ||३||

प्रसाद ब्रह्मदेव को, रचीस आज सृष्टि ला |
नमावु माथ प्रेम को, वको विसाल दृष्टि ला ||
भयेव सम्वता सुरू, विक्रामदेव राज को |
करूसु मान आज मी, प्रभू शकारि काज को ||४||

तिव्हार देविमाय को, मनावु आज पासना |
करू उपास शक्ति की, अना लगावु साधना ||
पँवार देवि कालिका, करूसु आज प्रार्थना |
सुखी करो समाज ला, करो कबूल याचना ||५||

© इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"
गोंदिया (महाराष्ट्र),

पोवारी दिवस विशेष
पोवारी की साधना

आवो सबजन करबीन, राजाभोज आराधना
पोवारकं घरमा होये, पोवारी की साधना

माय पोवारी शान आमरी, वकं शानकी कामना
पोवारकं प्रगतीला, पोवारी की साधना

माय पोवारी बेटा तोरो नही सहे वल्गना
पोवारीमा बात होये, पोवारी की साधना

पोवारीमा काव्य होये, पोवारीमा गाना
पोवारीकं संवर्धनला, पोवारी की साधना

पोवारीमा बात करो, नोको करो रोना
भुल होये तरी करो, पोवारी की साधना

साहित्य मा चमक उठे, पोवारी को खजाना
पोवारी ला मान देये, पोवारी की साधना

नवो सालको पहिलो दिवस, चईतको महिना
पोवारी को भाषा दिवस, पोवारी की साधना

नवो सालको पहिलो दिवस, करबीन सबजन प्रार्थना
नित्य नेमलका करबीन, पोवारी की साधना

आवो सबजन करबीन, राजाभोज आराधना
पोवारकं घरमा होये, पोवारी की साधना
****

डॉ. शेखराम परसरामजी येळेकर
गुढीपाडवा

चैत्र शुद्ध प्रतिपदा

चैत्र शुद्ध प्रतिपदा
सण सें गुढीपाडवा
नव वर्ष मराठी को
संग आणसे गोडवा

साढे तीन मुहूर्त मा
एक मुहूर्त सें आज
हर्ष उमंग भरसे
मन मा वसंतराज

राजा विक्रमादित्य नं
शक युध्द जितकर
सुरू विक्रम सवंत
अज करं जगभर

दरवाजा पर सजी
मस्त रांगोळी तोरण
जय को प्रतीक आय
गुढी को शुभद सण

कोरो वस्त्र फुलहार
कडूनिब गोड गाठी
वहा गडू बांधसेत
गुढी सजावनसाठी

घर घर उभारके
ईच्छा आकांक्षा की गुढी
जोडो नातो प्रेमभाव
सोडो मन मा की अढी

शारदा चौधरी
भंडारा

पोवारी दिन

चैत्रशुद्ध प्रतिपदाला आयेव, विक्रम संवत हिंदूसण
नवचैतन्य की गुढी उभारो, सब पोवारी दिन मनावबन

नवो शृंगार करके आईसें, ऋतू बसंत मनभावन
सृष्टी सजी कलीफुल लक, बरसं सेंत आनंदघन
कोयार गावंसें मल्हार, निसर्ग संगीत सजावनं ।।

आंगणमा टाको सडारांगोळी, दरवाजापर तोरण
चवरीपर जरावो टवरी, करके कुलदेवी को सुमरन
नवरात्री को बेलापर, होय रहीसें मायको आगमन ।।

चैतको पावन महिनामा माता गढकलिकाला पुजबन
बनावंब रोटगा मायसाठी, पाच घर जोगवा मांगकन
निकले ढोबरी धार नगरीमा, भक्तिरुपी तेल जरावबन

पोवार वंश की शौर्यगाथा सें, इतिहास मा अमर
अज को शुभ दिनच सुरू भयेव विक्रम संवत्सर
राम अभिषेक दिंन अज, विक्रमादित्य राज्यारोहण।।

भुलके आपसी बैर समाजमा, जगावो सद्भावना
स्व:भाषा संस्कृती विकासकी, करो मंगलकामना
जपो अग्निवंशी क्षत्रिय पोवार, गौरवशाली पयचान

शारदा चौधरी
भंडारा

चलो मनावबीन हिंदू नववर्ष

चलो मनावबीन
सबजन हिंदू नववर्ष
मीले सुख समाधान
अना मनमा होये हर्ष

चैत्र की सुरूवात
नवो सपना की लाट
एकजूट होयकर
उजळे सुहानी पहाट

होये नवो आरंभ
आये नवो विश्वास
पोवारी भाषामा
भरबीन नवो श्वास

पोवारी भाषा की माया
सबदून से निराली
मुखमा बसी से जसी
अमृत की प्याली

राजाभोज को आशिष
गढकालिका को आशीर्वाद
एकजूट होयशानी आता
चलो मिटावबी रूढीवाद

सौ.वर्षा विजय रहांगडाले
बिरसी
ता.आमगांव
जिल्हा-गोंदिया

पोवाडा

महाराणी लीलावती

आयको आयको सब आयको, परमार नगरी की गाथा...
महाराणी लीलावती को गुणगौरव की कथा…

मध्यप्रदेशमा नगर धार वैभव की शान
गडकालिका माता मंदिर भक्ती को स्थान
असो पवित्र नगरीमा भोजराजा विराजमान
उनको भार्या को करूसू मी आज गुणगान
जीर जी,जी जी रं जीर जीर जीर जी

भोजको शौर्यला मिली साजिरी साथ
विद्या अना शास्त्र को लाभेव तेजस्वी हाथ
स्वर्णिम युगकी नायिका परमार कुलकी शान
ज्ञान संस्कार विभूषित तेजस्वीनी महान
भोज संगिनी होती विद्या की पहचान
न्यायकी ज्ञाता अद्वितीय उनकी आन
जीर जी,जी जी रं जीर जीर जीर जी

होती संस्कृत ग्रंथ की पारख
नीतीशास्त्राला देईस नवी ओळख
राजसभा मा होती विदूषी महान
वोको बुद्धीको नवललक गाजेव जहान
पोवार वंश की या अनोखी कमान
लीलावती भोज शक्ती को प्रमाण
देईस नारीजात की रेखा सवारस्यान
जीर जी,जी जी रं जीर जीर जीर जी

लीलावती मंजे नारी को तेज
विद्या साहस चातुर्यकी भव्य सेज
राजा भोज की सखी बडी गुणी
परमार साम्राज्यकी गरिमामयी रानी
उनको गुण बखानला नहीं थकी मोरी वाणी
जीर जी,जी जी रं जीर जीर जीर जी

प्रेरणारुपी छाया प्रेममयी लीलावती
वेद गणित की बखान करं महती
इतिहास गावंसे वोको बुद्धी साहस
परमार नगरीमा आजही वोको वास
पोवार नारी मनमा धरंसे उनको ध्यास
जीर जी,जी जी रं जीर जीर जीर जी

शारदा चौधरी
भंडारा

पोवारी दिवस

उत्सव मनावो आनंद मनाओ,
मिलकर पोवारी दिवस मनावो l

हिंदू नववर्ष की सुरवात मनावो,
घरभर का सबजन खुशी मनावो l

चैत्र नवरात्रि पावन पर्व मनावो,
मिलकर पोवारी दिवस मनावो l

सनातन धर्म की विजय मनावो,
पोवारी संस्कृति को ध्वज फैरावो l

पोवार / पँवार को मान बढ़ावो,
अज सब पोवारी दिवस मनावो l

विक्रम सवंत की सुरुवात मनावो,
राजा भोज की सब जय मनावो l

गाँव शहर विदेश जहाँ भी रहो,
मिलकर पोवारी दिवस मनावो l

संस्कार पोवारी मोती बनावो,
उत्थान पोवारी दिवस मनावो

क्षत्रिय धर्म की ताकत देखावो,
माय गढ़कलिका की जय मनावो l

राजा भोज की सब जय मनावो,
मिलकर दिवस पोवारी मनावो l

पोवारी संस्कृति की गाथा गावो,
माय पोवारी को दिवस मनावो l

डाँ. हरगोविंद चिखलु टेंभरे
मु. पो. दासगाँव ता. जि. गोंदिया/मो. ९६७३१७८४२४🙏🙏

गुढी ज्ञान रुपी....

●●●●●●●●●●●●

बढावबिन थर आता गुढी को
किताब रुपी एक को वऱ्या एक
हर थरमा की किताब बाचबीन
आपलो बुद्ध्यांक बढावन नेक.

गुढी उभारके ज्ञान को प्रसार
घरघर ज्ञानगंगा बहावबी
अज्ञान को अंधारोला दूर
करस्यानी ज्ञानज्योत पेटावबी.

आधुनिक सोच की गुढी लगाय
दूर होये अनिष्ट प्रथा न् रूढी
आनबी नव सृजनशील पिढी
याच रहे नवं सकल्प की गुढी.

किताब से ज्ञान की अथांग रूप
देबीन ओलाच गुढी को स्वरूप
होये शिक्षण को प्रचार प्रसार
शुशिक्षित दिसे समाज को रूप.

किताबला देबी आदर को स्थान
करबिन ओकोमाल् ज्ञानार्जन
बढायके गुढी पाडवा को मान
आयेव नववर्ष हर्ष बढावन.

==========================

उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरीत)
रामाटोला गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू)